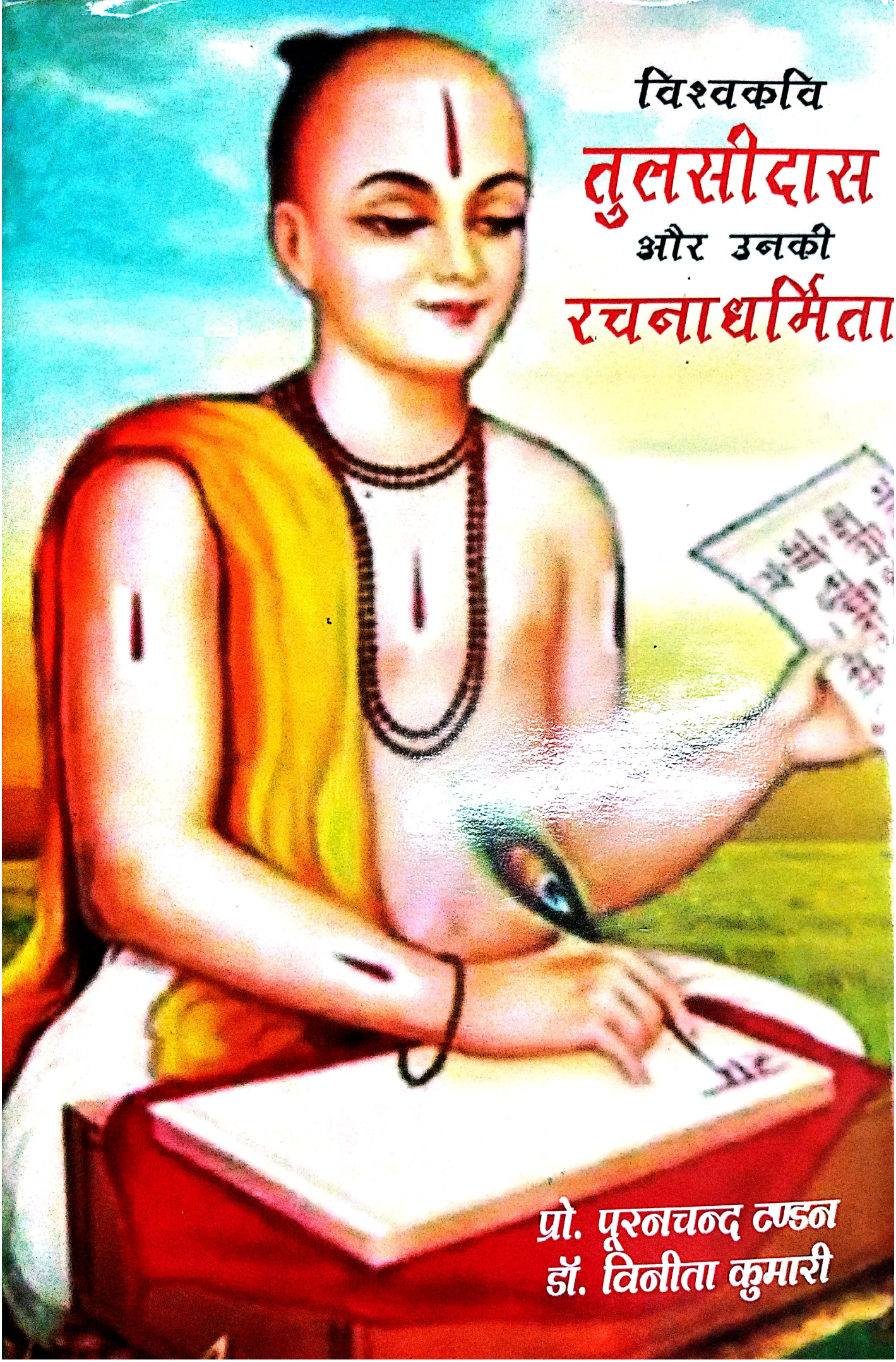

विश्वकवि

तुलसीदास
और उनकी
रचनाधर्मिता

प्रो. पूरनचन्द टण्डन
डॉ. विनीता कुमारी

Scanned with OKEN Scanner

विश्वकवि तुलसीदास और उनकी रचनाधर्मिता

सम्पादक

प्रो० पूरन चन्द टण्डन

डॉ० विनीता कुमारी

भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ

Scanned with OKEN Scanner

■ प्रकाशक :
भारतीय साहित्य प्रकाशन
57-ए, न्यू आर्य नगर, जेल रोड
मेरठ–250004

■ ISBN : 978-81-88556-93-9

■ प्रकाशन-वर्ष : 2020

■ मूल्य : ₹ 400.00

■ मुद्रक :
पल्लवी प्रैस, मेरठ

Scanned with OKEN Scanner

क्रम

1. तुलसी की विश्व व्याप्ति
–प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित **7**

2. उत्तरकांड : प्रश्नाकुलित प्रतिपाद्य की रामकथा
–प्रो० जयप्रकाश शर्मा **15**

3. तुलसी साहित्य में काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का विश्लेषण
–प्रो० हरिशंकर मिश्र **59**

4. रामचरितमानस के कुछ अनूदित प्रसंग
–प्रो० पूरन चन्द टण्डन **74**

5. रामचरितमानस : मार्मिक प्रसंग और काव्य-सौष्ठव
–डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा **90**

6. तुलसीदास के काव्य में लोक-जीवन
–डॉ० विनीता कुमारी **113**

7. तुलसी की राम-भक्ति के सामाजिक आयाम
–डॉ० संजीव कुमार **128**

8. मानस की भाषा की सहज संप्रेषणीयता
–डॉ० नरेश मिश्र **138**

9. तुलसी की कविता : वर्तमान संदर्भ
–प्रो० जगदेव कुमार शर्मा **152**

10. युग सापेक्षता और तुलसी के नारी पात्र
–डॉ० सुनील कुमार तिवारी, रश्मि पाण्डेय **161**

11. भक्त तुलसीदास और कृष्ण गीतावली
–डॉ० मधु लोमेश **171**

Scanned with OKEN Scanner

तुलसी की कविता : वर्तमान संदर्भ

(प्रो० जगदेव कुमार शर्मा)

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य जगत में भक्ति के उच्च शिखर पर विराजमान हैं। उनकी काव्य-रचनाएँ सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याण के लिए श्रेष्ठ मार्ग-प्रशस्त करती हैं। उन्होंने भारतीय लोक-जीवन और लोक-संस्कृति को समृद्ध करने में अमिट योगदान दिया। उनकी रचनाएँ भक्ति-भाव से ओत-प्रोत हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में गोस्वामी जी के प्रादुर्भाव को हिंदी काव्य के क्षेत्र में एक चमत्कार समझना चाहिए। हिन्दी काव्य की शक्ति का पूर्ण प्रसार इनकी रचनाओं में ही पहले पहल दिखाई पड़ा। (हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-92) हिन्दी कविता को शक्ति प्रदान करने में तुलसीदास की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बाद की हिंदी कविता भी उनकी कविता से प्रेरणा ग्रहण करती दिखाई पड़ती है। उनके ग्रंथों में अनेक भावों का समावेश हुआ है। वे सामयिक आधार पर कविता रचते हैं। उनकी कविता समाज के प्रत्येक पक्ष को ध्यान में रखकर लिखी प्रतीत होती है। तुलसी का हिन्दी साहित्य परम्परा में उल्लेखनीय योगदान है।

तुलसीदास ऐसे युग-प्रवर्तक कवि अथवा रचनाकार हैं जिन्होंने अपने युगीन समाज को एक नई दृष्टि प्रदान की। वे भारतीय ज्ञान परंपरा के वाहक हैं। उनकी रचनाएँ मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण हैं। उनकी कविता में भारतीय ज्ञान की पूरी परम्परा के दर्शन होते हैं। उन्होंने वेद, पुराण, उपनिषद्, दर्शन आदि को अत्यन्त मनमोहक रूप में अपनी लेखनी से सरल रूप में प्रस्तुत किया है। डॉ० रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक 'भारतीय सौंदर्य-बोध और तुलसीदास' में

लिखा है कि तुलसी को निकालकर हिंदी साहित्य की परम्परा से संबंध जोड़ना असम्भव है। इस परम्परा में जो कुछ मूल्यवान है, जो कुछ महत्वपूर्ण है, जो कुछ सदा के लिए संग्रह करने योग्य है, वह तुलसी में सुरक्षित है और बहुत बड़ी मात्रा में सुरक्षित हैं।" उनकी प्रतिभा अपराजेय है। उन्हें त्यागकर कोई भी युग-प्रवर्तक कवि हो नहीं सकता। उनकी कविता में जीवन के प्रत्येक पक्ष को समझने के सूत्र विद्यमान हैं। वे शास्त्र एवं लोक परम्परा को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करते हैं। कहें कि उन्होंने शास्त्र-परम्परा को सहज ढंग से तत्कालीन सरल भाषा में, सरल शैली में प्रस्तुत कर दिया है। भले ही तुलसीदास ने ज्ञान की पूर्व में कही गई बातों को पुनः दोहराया हो फिर भी इस दोहराव में युगीन समाज में फैले मत-मतान्तरों में समन्वय का महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने समाज को टूटने और विशृंखल होने से बचाया। उनकी रचनाओं में जहाँ-तहाँ प्रत्येक दार्शनिक विचार के तत्त्व दृष्टिगत होते हैं। वे सब प्रकार के भेद-भाव को मिटाकर आगे बढ़ने की ओर संकेत करते हैं। जैसे–

"सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुधबेदा।।
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।"

अर्थात् सगुण और निर्गुण में कुछ भी भेद नहीं है–मुनि, पुराण, पंडित और वेद सभी ऐसा कहते हैं। वास्तव में जो निर्गुण, अरूप (निराकार), अलख (अव्यक्त) और अजन्मा है, वही भक्तों के प्रेमवश सगुण हो जाता है। तुलसीदास अपनी कविता में भेद की दृष्टि को समाप्त कर उसका समाधान करते प्रतीत होते हैं। वे किसी भी दर्शन विशेष की सीमाओं में बँधते नहीं दिखाई देते। अपनी बात सहज ढंग से कहकर आगे बढ़ जाते हैं। उनकी कविता में अपने युग को प्रतिबिम्बित करने का भाव स्पष्ट परिलक्षित होता है, किन्तु साथ ही वे वर्तमान युग एवं समाज को भी राह दिखाने का कार्य करते हैं। तुलसीदास इसलिए भी बड़े कवि हैं क्योंकि वे छोटे-छोटे सांसारिक पचड़ों में न पड़कर उनसे बचते हुए एक नवीन दिशा का सूत्रपात करते हैं। तुलसीदास की कविता के संदर्भ में आचार्य महावीर प्रसाद